समाजशास्त्र और साहित्य के बीच संबंध आवश्यक–नामवर सिंह

शांतिपूर्ण समाज की संकल्पना के साथ ३५ वें सामाजिक अधिवेशन का समापन

आखिरी दिन गांवों में स्वराज लाने की दिशा पर विमर्श, अगला अधिवेशन भुवनेश्वर में

वर्धा, ३१ दिसंबर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में २७ से ३१ दिसंबर २०११ के बीच आयोजित सामाजिक विज्ञान कॉंग्रेस के पांच दिवसीय ३५ वें अधिवेशन का समापन दि. ३१ को विश्वविद्यालय के गांधी हिल्स पर हुआ! समाज के सभी तबकों को किस प्रकार बराबरी का हक दिलाया जाए और पूरी दुनिया में कैसे शांतिपूर्ण सहअस्तित्व कायम हो इस विषय पर आयोजित इस अधिवेशन की समाप्ति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह के अध्यक्षीय उद्‌बोधन के साथ शनिवार को हुई। अपने संबोधन के दौरान प्रख्यात आलोचक प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि समाजशास्त्र और साहित्य दोनों विषय में संबंध स्थापित किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारतीय ग्राम्य जीवन के बारे में 'विलेज इंडिया' नामक समाजशास्त्र की पुस्तक से ज्यादा अच्छा ग्राम्य जीवन का वर्णन प्रेमचंद के साहित्य में मिलता है। सामाजिक विज्ञान अधिवेशन का मुख्य विषय 'शांतिपूर्ण सहअस्तित्व' पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह बहुत पुराना विषय है लेकिन आज तक कोई सार्थक परिणाम नहीं दे पाया। उन्होंने कहा कि कोई भी समाजाशास्त्र अपने ज्वलंत प्रश्नों और चुनौतियों के बदौलत हीं महत्ता पाता है, इसलिए आवश्यक है कि सभी समाजशास्त्र के विषयों को साहित्य के साथ जोड़ा जाए ताकि समाज में शांति और सहअस्तित्व कायम हो सके। उन्होंने कहा कि यूरोप और अन्य पूर्व के समाजशास्त्रियों ने जितना काम किया है, उससे कहीं ज्यादा काम भारत में किए जाने की आवश्यकता है, लेकिन हो नही पा रहा है। यदि ऐसा नहीं हो पाया तो समाजशास्त्र नख–दंत विहीन विषय हो जाएगा।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए वर्धा और हिंदी विश्वविद्यालय से उपयुक्त स्थान कोई और दूसरा नहीं हो सकता था। उन्होंने कहा कि सहअस्तित्व का मूल स्वर है कि अगर दुनिया में सचमुच शांति स्थापित करनी है तो सभी को बराबरी के नजरिए से देखना होगा। उन्होंने बाहर से आए अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि जिन शोधार्थियों ने विभिन्न विषयों पर अपने शोध प्रस्तुत किए हैं वे उनके प्रति सचमुच आभारी हैं।

इस दौरान भारतीय सामाजिक विज्ञान कांग्रेस के स्थानीय सचिव और विश्वविद्यालय संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने बाहर से आगत शोधार्थियों और शिक्षकों का आभार माना। इस दौरान मंच पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन, उपकुलसचिव डॉ. कैलाश जी. खामरे, चीफ रिपोर्टिंग कमेटी के सदस्य के.एस. राव, सामाजिक विज्ञान अधिवेशन के सचिव प्रो एन.पी. चौबे, और अध्यक्ष के. करूणाकरण उपस्थित थे। अगले वर्ष २०१२ में होने वाले ३६ वें सामाजिक विज्ञान कॉंग्रेस के अधिवेशन के लिए प्रो. संतोष कर को अध्यक्ष के रूप में चुना गया। समापन सत्र के प्रारंभ में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह का स्वागत कुलपति विभूति नारायण राय ने सूत की माला पहनाकर किया। ३५ वें सामाजिक विज्ञान के आयोजन के लिए अध्यक्ष के.

करूणाकरण ने सफल आयोजन के लिए हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति तथा समस्त विवि परिवार का आभार माना।

बॉक्स में ले ले

समापन से पूर्व भारतीय ग्रामीण समाज में किस तरह से बराबरी कायम की जाए विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। जिसमें तमिलनाडु के आर. ए. एलंगों के पंचायत मॉडल दिखाए गए। एलंगों ने १९९६ में सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर पंचायतों में समानता लाने के उद्देश्य से काम करना शुरू किया था। जिसके परिणामस्वरूप उनके इलाके के ४९ गांव मॉडल विलेज में तब्दील हो गए हैं। उन्होंने बताया कि जिन गांवों में बिजली के साधन नहीं थे, अब वही गांव स्वउद्यम के बल पर ३५० मेगावाट बिजली पैदा कर रहे हैं। इससे गांवों को पर्याप्त बिजली भी मिल रही है और गांव के लोग बिजली बेचकर गांवों के विकास में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय तकनीक संस्थान के विद्वान और लखनउ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. आर. पी. सिंह, के. करूणाकरण इत्यादि इस सत्र में उपस्थित थे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी